और आर्थिक असमान हो जाता है। आनुपातिक कर से भी असमानताएँ कम नहीं हो पाती है। केवल प्रगतिशील कर के द्वारा ही आर्थिक धन के वितरण को न्यायपूर्ण बनाया जा सकता है और असमानताएँ कम की जा सकती है। वृद्धावस्था पेंशन, सामाजिक सुरक्षा, निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सा आदि पर किया गया व्यय प्रगतिशील है। सार्वजनिक व्यय प्रगतिशील होने पर धन के वितरण की विषमताएँ कम होती चली जाती है।

लोक व्यय के माध्यम से ही देश के आर्थिक पिछड़े हुए क्षेत्रों में आर्थिक विकास के कार्यक्रम अपनाये जा सकते है। इससे विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक विकास का वितरण न्यायपूर्ण ढंग से किया जा सकता है। और आर्थिक वर्ग की आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना रहती है। इसके फलस्वरूप राष्ट्र का आर्थिक जीवन अधिक सन्तुलित एवं स्थायी होता है।

आर्थिक जीवन पर प्रभाव

लोक व्यय आर्थिक जीवन के अनेक प्रकार से प्रभावित करता है। इसके द्वारा आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में सहायता मिलती है। लोक व्यय मन्दी की स्थिति से छुटकारा पाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। मन्दी काल में कीमत गिर जाने के कारण उत्पादन, रोजगार आय तथा व्यय का स्तर गिर जाता है। ऐसी स्थिति में सरकार बेरोजगार लोगों की सहायता तथा सार्वजनिक निर्माण-कार्यों पर अधिक व्यय करने लगती है। ताकि व्यापारियों तथा उद्योगपतियों द्वारा किये गये व्यय में कमी के प्रभाव से अर्थ-व्यवस्था को बचाया जा सके। मन्दी काल में किये गए इस प्रकार के लोक-व्यय को क्षतिपूरक व्यय (Compensatory expenditure) कहा जाता है। इसके द्वारा लोगों के पास अतिरिक्त क्रय-शक्ति पहुँचती है, प्रभावपूर्ण मांग बढ़ती है और रोजगार एवं

उत्पादन में कमी रहती है। कुछ अर्थशास्त्रियों का विचार है कि यदि सरकार काफी अधिक मात्रा में व्यय करे तो उसके द्वारा मन्दी से उबरने का ऐसा क्रम चालू किया जा सकता है जो स्वयं अपनी प्रेरणा से ही एक अनिश्चित अवधि तक अपना कार्य जारी रख सकता है। ऐसे व्यय को 'पम्प प्राइमिंग (Pump priming)' व्यय कहा जाता है। प्रो० केन्स के विचार में लोक-व्यय एक ऐसा सन्तुलन तत्व है जो राष्ट्रीय आय को एक निश्चित स्तर पर बनाये रख सकता है।

लोक-व्यय का महत्व आर्थिक विकास के क्षेत्र में कम नहीं है। अर्द्ध-विकसित देशों में सरकार निजी क्षेत्र के एक पूरक के रूप में उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों का संचालन स्वयं करती है। सार्वजनिक क्षेत्र में प्रायः वह उद्योग स्थापित किये

जाते है जिनका चलाना निजी क्षेत्र के लिए असम्भव होता है अथवा जो देश के भावी विकास में योग देने वाले उद्योग होते है। लोक-व्यय विकसित देश के आर्थिक संगठन को स्थिर रखता है। तथा विकासशील देश में आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि सरकार द्वारा अनेक मदों पर बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से व्यय किया जाये, साधनों का अपव्यय न होने पाये।

Dr Sandhya Rai
(Part - 3)